B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

HISTORY HONS.

BA DEGREE-1

PAPER-1

UNIT-4

Department of History

Pankaj kr.Mishra

Date-06/07/2020

TOPIC- समुद्रगुप्त की उपलब्धियों के अंतर्गत सैन्य अभियान ।

Part-D

इसके अंतर्गत समुद्रगुप्त के द्वारा की गई सैन्य अभियान के चरण को समझ पायेंगे। आज की पाठ्य सामग्री सैन्य अभियान के तृतीय, चतुर्थ, एवं पाँचवाँ चरण से संबंधित है। पिछले भाग में हमने प्रथम एवं द्वितीय चरण की अध्ययन किए थे।

Scanned with CamScanner

सैन्य अभियान के शेष चरण

(C) तृतीय चरण :- आटविकों के प्रति अभियान

समुद्रगुप्त ने मथुरा से नर्मदा घाटी तक फैली हुई आटविक जातियों को पराजित कर उनके प्रति परिचारिकी कृत अर्थात् सेवक बनाने की नीति अपनायी। वस्तुतः दक्षिणी राज्यों पर विजय प्राप्त करने हेतु इन क्षेत्रों को जीतना जरूरी था। इन सीमान्त आटविक राज्यों को साम्राज्य में इसलिए शामिल नहीं किया गया क्योंकि इन क्षेत्रों एवं गंगा-यमुना घाटी के क्षेत्रों के बीच राजनीतिक सामाजिक परंपराओं में भिन्नता थी।

(D) चतुर्थ चरण — दक्षिण अभियान

समुद्रगुप्त ने दक्षिणी भारत के 12 राज्यों के संघ को पराजित किया। इनमें वेंगी, कांची, कर्नाटक आदि क्षेत्र शामिल थे। इनके प्रति समुद्रगुप्त ने ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति अपनायी अर्थात् राज्यों को जीतकर उनसे धन प्राप्त कर पुनः राज्य उनके राजाओं को सौंप दिया। यह नीति समुद्रगुप्त की दूरदर्शिता का प्रमाण है। उसने दक्षिणी राज्यों के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। वस्तुतः संचार के तीव्र साधनों के अभाव और सुदूर दक्षिण में शासन चलाने की कठिनाइयों को समझते हुए समुद्रगुप्त ने जीते हुए राज्यों को पुनः उनके राजाओं को लौटा दिया और बदले में दक्षिण की प्रचुर धन संपदा को प्राप्त किया। यही वजह है कि समुद्रगुप्त के काल में केवल सोने के सिक्के मिलते हैं। इस सैन्य अभियान से राजकोष पर कोई अतिरिक्त दबाव नहीं पड़ा बल्कि वह सुदृढ़ हुआ। आगे दक्षिणी राज्यों के प्रति यही नीति अलाउद्दीन खिलजी ने अपनायी और सफल रहा। जबकि मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिणी राज्यों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति अपनायी और वह असफल रहा।

(E) पाँचवा चरण — विदेशियों के प्रति सैन्य अभियान

समुद्रगुप्त ने भारत में मौजूद विदेशी शक्तियों जैसे शक, कुषाण के विरुद्ध सैन्य अभियान कर उन्हें पराजित किया और उनके प्रति आत्मनिवेदन, कन्योपायन, गरुत्मदंक-स्वविषय-भुक्ति याचना अर्थात् सामने प्रस्तुत होकर मैत्री की याचना करना, कन्याओं की भेंट करना तथा अपने विषय या भुक्ति के प्रशासन के लिए गरुड़ मुहर से मुद्रित शासनादेश की नीति को क्रियान्वित की।

Scanned with CamScanner

समीक्षा

इन सैन्य अभियानों से स्पष्ट होता है कि समुद्रगुप्त एक अनोखा साम्राज्यवादी था क्योंकि उसने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के प्रति भिन्न-भिन्न नीतियाँ अपनायी। जिनका आधार राजनैतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक था। एक प्रकार से निश्चित भू-भाग के शासकों से अधीनता स्वीकार कराने की नीति समुद्रगुप्त की व्यवहारिक संप्रभुता का परिचायक है। जो उसे यथार्थवादी, साम्राज्यवादी शासक के रूप में स्थापित करती है। समुद्रगुप्त को अपने सैन्य अभियानों के कारण भारत का नेपोलियन भी कहा जाता है। किन्तु यहाँ समझने की बात यह है कि समुद्रगुप्त ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए जीते गए क्षेत्रों के प्रति भिन्न-भिन्न नीतियाँ अपनायी और अपने साम्राज्य को मजबूती प्रदान की जबकि नेपोलियन के सैन्य अभियान ने उसके साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त किया। इतना ही नहीं नेपोलियन को लिपजिग, वाटरलू की लड़ाइयों में पराजय का सामना भी करना पड़ा। मास्को अभियान में भी वह विफल रहा जबकि समुद्रगुप्त अपराजेय था। इस दृष्टि से कूटनीतिक एवं साम्राज्यवादी दृष्टि से समुद्रगुप्त नेपोलियन से श्रेष्ठ प्रमाणित होता है।

Pankaj
06/07/2020

——— ×××× ——— ×××× ———

Scanned with CamScanner